

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1.629





म न क र ग ष



२ धूम नदाय काल नग्राग सना द्वादिस्रु कटि कर्णसु
वापेना हिवालाहितपिरुनागा कृषातथ सिषितम्यवः
वाग ॥ ॥ द्वा लंघन विनायक पक्षमुखि पूजं यत
चडुत्य (०) महाकाल मग्नानक पूव छीयजयगुस्व
सुहवतीनागी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वाक ॥ ॥ वा न लि द्वा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

विन पालिमा श्री वायुव्यगमन जूनननागद्वै २ यतन
निकर्त ॥
स्यसासयूठवव धूमया ॥ ॥ मिखास्याक भरुयद
मिव सन्नाययय हानि कंस सिजय हाहा वा द्वा
विक दयिव ॥



रभिं हतदन्ता सयगलुमाला निनादलाक्रमयथा
ग्राम्पुष्टा। मनसुमाग्रासनकम्यनच वीलप्रसक्ता
करुजाननागम् ॥ ॥ अतिविधि ॥ यवैतस्मन्मयग्रह
दवगाक्षय विषुवामूलमस्तु काल उच्चिष्टयुज
मन्त ॥ सुभूतवर्तिनाग ॥ ॥ १२ ॥ १०
॥ १२ ॥ इसमस्तु हातिसिमाथ देवक्री ॥ दक्षिण

दिस नकुंकनाग वाणधनुनाकाल यय
वयायदयिव अनमनिकर्त ॥ ॥ कनपा
लाहाति नविवसा च्छायकन धूना दववमुठा
कंस हयाक्ष ॥ सिंहया ॥ ॥ ईशनाहाथ गल
निरका ययस्यायिव ॥



॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ कुरुते नित्यं सुखदयः प्रदत्तमात्मनो नृणां
 देवाच विज्ञायाथ कस्तानि नृणां नित्यं सुखं वन्द्यं धनकोशः
 रघुनाथः ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वथा ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



ASHA ARCHIVES

1.629

१० श्रीगुरुग्राह्यां कांकीं कौं महाशिव कुरुपात्राय
कुरुं कुरुं उं श्रीसिद्धिचामुखाय वीजमृगजमृगसुखाविधं स
नाय (६) उं तांतीं श्रीतवाताही कांकां कुरु उं गंगासाध
नाय १ सत्यनकथयिष्ये सत्यवाचय २ कवाचयि ३ कामा
क्ष्याय ४ इशीं ५ ध्यानमहादेवस्य वाचा २ यथापतिदेवस्य वा
चा २ विष्णुवाचा २ ॐ न्द्रादिदेवस्य वाचा २ वायुकिनागवाचा २

गानकनागस्य वाचा २ गणनागस्य वाचा २ कक्करक
वाचा २ पद्मनागस्य वाचा २ महापद्मनागस्य वाचा २ सख
पात्रस्य वाचा २ कृतिकनागस्य वाचा २ सफसागत्रस्य भा
हाय २ केरनिवाचकनायि २ उं गृमृगध्वनाय २ वल्हाय
सत्यनकथयि कामि ३ कुरुं ३ स्वाहा ॥ १ ॥ श्वमल नृप
३०८ ग्राह्यनक्षत्रपुष्पं कुर्यात् ददति विय ॥

मिन्नक त क ल न व स्य इय ॥

ॐ नमः श्रुति काय ॥ न कं शी कं ॥ ॐ नं कं का
वामू छाय विर्य ददयाय नमः ॥ ॐ ऐ निस सखा ॥ ॐ ऐ गिर
य वाषट् ॥ ॐ ऐ कदवाय दू ॥ ॐ नं गु गु याय वाषट् ॥ ॐ जू
लाय रुट् ॥ ॐ जू गु गु याय नमः ॥ ॥ नर्व कल गन कन
॥ न न न्यास ॥ कता न न्यास ॥ ॥ वा दू र्व सा दू र्व वी
॥ न न न्यास ॥ अष क र्क र्क ॥ वामू छाय विर्य दू दपम रुन

वा कर्न ॥ ॐ नमः श्रुति काय ॥ मा क्क छे उ वा च ॥
य छे छी पत म ला क्क ॥ सर्व न ला क ल न ला ॥ ॐ न क स्य वि द
ला र्क ॥ त म्य क दि पि ता म ह ॥ १ ॥ शी व श्री वा च ॥ अ म्मि य क्क
म न वि य ॥ सर्व रु गा य का ल क ॥ द वा म्म क व र्व दू र्व ॥ क रु न
॥ म हामू ले ॥ २ ॥ अ म्मि य द क्क मा न रु ॥ ग क्क म ध ग
॥ म प ले ॥ वि ष म दू र्व म वा पि ॥ त या ल नि न र्क म ना ॥ ३ ॥

नगंषां जायमं किं ॥ दण्डं त्रिंशं संकटं ॥ नापयं तस्य प्रसामि
सांकटः स्वहयं हने ॥ ७ ॥ इयं सुंदरी वाम ॥ ८ ॥ इयं
मंगलका त्रिणी ॥ इयं सर्वोसि कंदरी ॥ कलत्रो गिन मा
मुत ॥ ९ ॥ ये मुहुरा मुता नित्यं ॥ तेषां सिद्धि युक्ता यन
यता सुखं वाम ॥ वानो हीमतीषासना ॥ १० ॥ नुं जीगत्र
समाश्रुता ॥ वैष्णवी गत्रासना ॥ माहं येनी वषाश्रुता ॥ कोमात्रा

निषिवाश्रुता ॥ ११ ॥ उक्तायनी हंसमाश्रुता ॥ सर्वोत्तराश्रुता
रुषिता ॥ तन्त्रीयश्रासनाश्रुता ॥ यश्रुता हनिषीया ॥ १२ ॥
लोतारूपश्राश्रुता ॥ १३ ॥ येनी वषाश्रुता ॥ १४ ॥ सर्वमाश्रुता सर्व
सर्वथागसमन्विता ॥ १५ ॥ नानाश्रुताश्रुता ॥ नाना
ताविरुषिता ॥ स्यते ध्ये मुक्ती के ॥ सर्वदिव्यश्राश्रुता ॥
१० ॥ १६ ॥ येनी तं महानी ॥ १७ ॥ यश्रुतागसु ॥ १८ ॥ येनी ॥ १९ ॥ येनी

थमा रुक्मिणी दद्यात्कायसमूहवा ॥ ११ ॥ शंखचक्रगण्ड
किं रुक्मिणीसुसनायुधं स्वर्गनाममर्चयेत् यत्र गृहपादमवव ॥
२ ॥ कूनायुधं स्वर्गनाममर्चयेत् सार्त्तगायुधमूर्तिर्मा देह्याना
दहनासाय तूकानामहयायव ॥ १३ ॥ धारयत्यायुधानि
त्यं दवाणां च हिताय वै नमस्तुतं महा प्रोदं महाधाय प
त्रकम ॥ १५ ॥ महावत् महासाह महाहयविनासिनी ॥ १६ ॥

होमां दवीदृष्टीकं गणनाहयवद्वेनी ॥ १८ ॥ यायात्रक
नुमामेति ग्राणयामिनि देवतां दन्ति लेखेववाताही न
अहोस्वर्गकात्रनि ॥ १९ ॥ युगियावात्रणी नरु वायुयामि
गवाहणी तडदियात्रिककोवनि देवतां ग्राणयामिनि ॥ २० ॥
॥ उद्वेवकाणी मत्रक दधस्ववेष्टुवीसुथा चर्वदगदि (मत्रः
क वामुत्तसवकाहना ॥ २४ ॥ कयाभवायुगसुठ विजया